International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 228-231

कालिदास-प्रणीत 'मेघदूत' में जीवन मूल्यों की अवधारणा

मोहम्मद इरफान सिद्दीकी

शोधच्छात्र, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

प्रस्तावना

साहित्य समाज का दर्पण है यह कथन तत्कालीन साहित्य में दिखाई पड़ता है चाहे जिस सदी का समाज हो उसकी परिस्थितियाँ तथागत साहित्य में अवश्य प्रतिस्फुटित हुई है। समाज में हो रहे आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, वैयाक्तिक जीवन एवं मानवीय-मूल्यों की एक झांकी अवश्य दृष्टगत होती है। मानव-मूल्य का उद्देश्य मानव जीवन को गरिमा प्रदान करना है इससे जीवन के धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति होती है, मानव-मूल्यों का सम्बन्ध नैतिक विचारों से है हमारी संस्कृति में मानव-मूल्य को अधिक महत्त्व दिया गया है। उसमें भी कालिदास कालीन साहित्य की तो बात ही कुछ अलग है। कालिदास के प्रत्येक काव्य में मानवीय मूल्य कूट-कूट कर भरा है। उनकी प्रत्येक लाइन समाज को एक नया आयाम देती है। उन्होंने समाज को जिया था तथा सामाजिक गतिविधियों से चिरपरिचित थे महाकवि कालिदास की सभी रचनाओं में मेघदूत संस्कृत जगत् की अन्यतम कृति है जिसमें वैयक्तिक, सामाजिक नैतिक आध्यात्मिक राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय आदि जीवन मूल्यों का सफलतम प्रयोग मिलता है। कालिदास का मेघदूत यह सन्देश देता है कि अगर मानव का विश्वास मात्र निर्जीव पदार्थ से भी हो जाय तो भी श्रद्धा वश, जीवन्त हो जाता है।

महाकवि कालिदास का प्रेमपरक जीवनमूल्य यह है कि प्रेम वस्तुनिष्ठ न होकर समानिष्ठ होना चाहिए, वह क्षणिक न होकर शाश्वत् हो, अधोगामी होने की अपेक्षा उर्धगामी हो, वासनात्मक की अपेक्षा साधनात्मक हो। कालिदास का महाकाव्य सरस्वती प्रेम की मूलवर्तिनी वृत्तियो तथा क्षुधा को जगाती हुई भी अन्ततः उन्हें 'शिव' की नियामक मर्यादाओं में बाँध देती है। कालिदास की यह विशेषता उनकी सम्पूर्ण कृतियों में द्रष्टव्य होती है।

कवि का प्रेमपरक मूल्य वासनात्मक प्रेम की अपेक्षा साधनात्मक प्रेम को प्रधानता देता है कवि ने वासनामय प्रेम की अग्नि परीक्षा करके पुनीत प्रेम की प्रतिष्ठा की है।

कालिदास इस खण्डकाव्य के माध्यम से बताते है कि एक विरही व्यक्ति की पीड़ा को जब घूम, ज्योति, सलिल, मरुत का सन्निपात मेघ, जो एक निर्जीव पदार्थ है यक्ष की पीड़ा को दूर कर सकता है तो भला मानव मात्र क्यों नहीं? कालिदास मेघदूत के प्रथम पद्य में ही कर्त्तव्य तथा प्रेमपरक जीवन-मूल्यों की झलक दिखाई है-

कश्चित्कान्ताविरह-गुरूणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः
शोपेनास्तङ्गमितमहिमा वर्षभोग्येण भर्तुः।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्यादकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु।।[1]

इस श्लोक के माध्यम से महाकवि कालिदास के द्वारा वर्णित-मंगलाचरण में ही मानव-मूल्य की स्पष्ट छाप दिखाई देती है क्योंकि इसमें कालिदास द्वारा कर्त्तव्यनिष्ठ होने का संकेत दिया गया हैं जो व्यक्ति अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करता उसका कालिदासीय यक्ष के अनुसार दण्ड का भागी होता है। इसी मंगलाचरण में मानव-मूल्य के दूसरे रूप में अवलोकन करते हैं तो यह सन्देश प्राप्त होता है। कि कालिदास का जो यक्ष है वह अत्यन्त कष्टमय वियोगावस्था में भी, प्रिया रूपी प्रेम को नष्ट नहीं होने देता है। अपितु वह वियोग में और अधिक उद्दीप्त हो जाता है।

वैयक्तिक मानवीय-मूल्य का वर्णन मेघदूत में इस प्रकार वर्णित है-

जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां।
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।।[2]

महाकवि कालिदास इस पद्य में यह बताना चाहते हैं कि यक्ष अत्यन्त विवेकी है क्योंकि यक्ष कुबेर के शाप से, प्रिया से वियुक्त हो जाता है तो अपना संन्देश पहुंचाने से पूर्व विनम्रभाव से मेघ की बड़ी प्रसंसा करता है। उसे संसार में प्रसिद्ध पुष्कर और आवर्तक नामक मेघों के कुल में जन्मा तथा इन्द्र का कामरूपी पुरुष कहता है और साथ में यह भी कहता है कि तुम्हीं ऐसे गुणी व्यक्ति हो जो मेरा सन्देश मेरी प्रिया तक पहुँचा सकते हो, इसलिए हे मेघ! मैं तुम्हारे ही आगे हाथ पसार रहा हूँ। यक्ष मेघ से इसलिए कह रहा है कि मेघ अपनी तारीफ सुनकर हमारा कार्य शीघ्र अवश्य पूर्ण कर देगा। इस प्रकार यह श्लोक, यक्ष के विनम्रता पूर्ण व्यक्तित्त्व को दर्शाता है।

मेघदूत में एक स्थल पर वात्सल्य प्रेमपरक मूल्य दृष्टिगत होता है पार्वती जी अपने पुत्र स्वन्द से अत्यधिक स्नेह रखने के कारण उसके वाहन मयूर के पंख को अपने कान में धारण करती हैं माता की पुत्र के प्रति भावना को ध्यान में रखते हुए ही कवि मेघ से स्कन्द वाहन मयूर का पुष्पों से अभिनन्दन तथा गर्जनों से नर्तन कराने के लिए कहते हैं-

ज्योतिर्लेखावलयि गलितं यस्य बर्ह भवानी
पुत्रप्रेम्णा कुवलयदलप्रापि कर्णे करोति।
धौतापाङ्ग हरशाशिरुचा पावकेस्तं मयूरं
पश्चादद्रिग्रहणगुरुभिर्गर्जितैर्नर्तयेथा:।।[3]

प्रस्तुत श्लोक में महाकवि कहते हैं कि मयूर यद्यपि कोई असाधारण वस्तु नहीं है जो मेघ उसका अभिषेक करे, किन्तु उस मयूर को पार्वती अत्यन्त स्नेह करती हैं क्योंकि वह उसके प्रिय पुत्र का वाहन है इसलिए यक्ष मेघ से मयूर का अभिषेक करने को कहता है।
कालिदास यक्ष और यक्षिणी के प्रेम की गहराई को बताते हुए कहते है कि वस्तुत: समाज में यह कथन है कि आशा ही एक मात्र जीवन है यह मेघदूत में सम्यक् रूप से दिखाई पड़ता है–

आशाबन्ध: कुसुमसदृशं प्रायशो ह्यङ्गनानां।
सद्य: पाति पणयि हृदय विप्रयोगे रूणद्धि।।[4]

प्रस्तुत श्लोक में महाकवि ने यह स्पष्ट किया है कि स्त्रियों का जो हृदय है वह फूल के समान शीघ्र ही कुम्हलाने वाला होता है परन्तु एक आशा ही ऐसा बन्धन है जो विरह अवस्था में भी जीवन जीने का एक कारण होता है। अगर यही आशा का बन्धन टूट जाय तो स्त्रियों का हँसना, मुसकुराना उसका हाव–भाव जो सारी चीजें है वह सब समाप्त हो जायेगा। इसीलिए आशा का बन्धन ही सब को रोक कर रखता है।
आज समाज में नैतिक आचरण, व्यवहार, सदाचार एवं अतिथि स्वागत की परम्परा का ह्रास होता चला जा रहा है इस पीड़ा से असहनीय होकर महाकवि कालिदास ने मेघदूत में अतिथि सत्कार को वर्णित किया है–

स पत्यग्रै: कुटजकुसुमै: कल्पितार्घाय यस्मै।
प्रीत: प्रीतिप्रमुख वचनं स्वागतं व्याजहार।[5]

प्रस्तुत श्लोक में कालिदास कहते हैं कि मनुष्य को चेतन के साथ–साथ अचेतन का भी स्वागत व्यवहार सदाचार इत्यादि का पालन करना चाहिए क्योंकि यक्ष ने मेघ का स्वागत कुटज के ताजे फूलों से पूजाकर उसे प्रसन्नतापूर्वक स्वागत का वचन कहा। यह हमारे मानवीय मूल्यों के वास्तविकता को दर्शाता है कि यदि अतिथि गृह में प्रवेश करे तो उनके सामने जो कुछ भी फल–फूल कन्दमूल आदि जो भी वस्तु हो उसे हम लेकर प्रसन्नतापूर्वक उसके सामने खड़े हो जायें।
यक्ष अपनी पत्नी यक्षिणी से अगाध प्रेम करता है इसलिए वह अपनी विरहदग्ध को चित्र में लिखता है–

त्वामालिख्य प्रणयकुपितां धातुरागै: शिलाया–
मात्मानं ते चरणपतितां यावदिच्छामि कर्तुम्।
अस्रस्तावन्मुहुरुपचितैर्दृष्टिरालुप्यते में
क्रूरस्तस्मिन्नपि न सहते सङ्गमं नौ कृतान्त:।।[6]

कालिदास इस पद्य में यह बताया है कि यक्ष यक्षणी के प्रेम में अत्यन्त विह्वल है इसलिए यक्ष कहता है– हे प्रिये! प्रेम के कारण रूठी हुई तुम्हारी तस्वीर बना कर ज्यों ही मैं अपने आप को तुम्हारे पैरों पर गिरा हुआ बनाना चाहता हूँ त्यों ही बार–बार उमड़े हुए आसुओं से मेरी आँखें भर आती है विधाता कितना क्रूर है जो चित्र में भी हमारे मिलन को नहीं सह सकता तो हमारे वास्तविक मिलन को कैसे सहेगा। यक्ष अत्यन्त विषाद में है इसलिए– आत्मविवशता के कारण अपनी दशा को कुछ न कहकर विधाता को उलाहना देता है। यक्ष का प्रेम यक्षिणी के प्रति इतना गहरा है कि वह अपने प्रेम के लिए विधाता को भी कोसता है।
खण्डकाव्य मेघदूत के नायक यक्ष के चरित्र में वैयक्तिक जीवन–मूल्य मानवता की पराकाष्ठा की प्रतिष्ठा है यक्ष यद्यपि मेघ को अपना कार्य अपनी प्रिया तक सन्देश पहुँचाने के लिए सौंपता है लेकिन उसमें मानवता भी है इसी कारण यक्ष मेघ की सुख सुविधा का भी पूरा पूरा ध्यान रखता है वह मेघ से कहता है–

मार्गं तावच्छृणु कथयतस्त्वत्प्रयाणानुरूपं
सन्देशं में तदनु जलद! श्रोष्यसि श्रोत्रपेयम्।
खिन्न: खिन्न: शिखरिषु पदं न्यस्य गन्तासि यत्र
क्षीण: क्षीण: परिलधु पय: स्रोतसां चोपभुज्य।[7]

प्रस्तुत श्लोक में कालिदास बताते है कि यक्ष मेघ को कहता है कि हे मेघ! मार्ग में चलते हए जब कभी थकने लगो, तो मार्ग में पड़ती हुई पर्वत की चोटियों पर ठहरते जाना, और जब'जब तुम पानी की कमी से दुबले पड़ों तब–तब झरनों का हल्का–हल्का जल पीते हुए जाना। यक्ष का मेघ के प्रति इस प्रकार का कथन उसकी मानवता को चित्रित करता है।
उचित और अनुचित का ध्यान रखते हुए कार्य करना नैतिक मूल्य के अन्तर्गत आता है यह ठीक है कि माँगने से मनुष्य का मान घटता है पर जीवन में कभी–कभी ऐसे अवसर भी आ जाते हैं। जब मनुष्य को माँगने के लिए विवश होना पड़ता है। ऐसी ही स्थिति में कालिदास ने बड़ी ही नीति की बात कही है कि यदि माँगना पड़े तो किसी बड़े–भले आदमी के सम्मुख ही हाथ फैलाना चाहिए किसी ओछे आदमी के सामने नहीं, इसी नैतिक मूल्य को ध्यान में रखते हुए यक्ष का यह कथन है–

तेनाथित्वं त्वयि विधिवशाद् दूरबन्धुर्गतोऽहं।
याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।।[8]

प्रस्तुत श्लोक में यह स्पष्ट किया गया है कि गुणी व्यक्ति के प्रति की हुई याचना निष्फल होने पर भी श्रेष्ठ है। पर नीच से मन चाहा फल पा जाना भी अच्छा नहीं होता।

कालिदास ने मेघदूत में अलका नगरी का चित्रण करते हुए लिखा है कि वह नगरी ऐसी लगती थी मानों स्वर्ग में अपने सत्कर्मों का फल भोगने वाले पुण्यात्मा लोग अपने पुण्य समाप्त होने के पहले ही, अपने बचे हुए पुण्यों के बदले, स्वर्ग का कोई चमकीला भाग लेकर अपने साथ उसे पृथ्वी पर उतार लाये हैं। अर्थात् अलका नगरी अपने सत्कर्मों के क्षीण होने के कारण मृत्युलोक पृथ्वी पर स्थित है–

स्वल्पीभूते सुचरितफले स्वर्गिणां गां गतानां।
शेषः पुण्यैर्हृतमिव दिवः कान्तिमत्खण्डमेकम्।[9]

प्रस्तुत पद्य में कालिदास बताते हैं कि यह कर्मपरक जीवनमूल्य है इसमें मनुष्य को अपने कर्मो का फल अवश्य भोगना पड़ता है कभी वह एक जन्म में प्राप्त हो सकता है और कभी जन्मान्तर में।
नैतिक मानवीय मूल्य को बताते हुए महाकवि कहते हैं कि यक्ष अपने सन्देशवाहक दूत मेघ से महाकाल शिव के मन्दिर में संध्या तक रुकने का विनम्र निवेदन करता है और कहता है कि जब महादेव जी की साँझ में सुहावनी आरती होने लगे तब तुम भी अपने गर्जन का नगाड़ा बाजाकर सन्ध्योपासना करना–

अप्यन्यस्मिञ्जलधर! महाकालमासाद्य काले
स्थातव्यं ते नयनविषयं यावदत्येति भानुः।
कुर्वन्संध्याबिलपटहतां शूलिनः श्लाघनीया
मामन्द्राणां फलमविकल लप्स्यसे गार्जितानाम्।।[10]

कालिदास ने यक्ष और उसकी प्रिया की प्रणय की एक निष्ठता से सचमुच मानव के आदर्श प्रेम का प्रतीक स्थापित किया है कालिदास के मेघदूत से हमें यह प्रेमपरक जीवन-मूल्य प्राप्त होता है कि शारीरिक सौन्दर्य एवं भौतिक वासना पर आधारित प्रेम क्षणिक एवं नश्वर होता है वह कभी भी सुखकारी एवं शान्तिप्रद नहीं होता परस्पर समर्पण, त्याग एवं कर्त्तव्य की भावना ही प्रेम को अनश्वर और दिव्य बनाती है। मेघदूत का नायक यक्ष अपनी पत्नी यक्षिणी से अगाध प्रेम करता है। इसलिए यक्ष अपनी भार्या की दशा का वर्णन इस प्रकार किया–

तां जानीथाः परमितकथां जीवितं में द्वितीयं
दूरीभूते मयि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम्।
गाढोत्कंठाम् गुरुषु दिवसेष्वेषु गच्छत्सु बालां
जातां मन्ये शिशिरमथितां पद्मिनीं वाऽन्यरूपाम्।[11]

प्रस्तुत श्लोक में यक्ष अपने सन्देशवाहक दूत मेघ से अपनी पत्नी यक्षिणी के प्रति अपनी प्रेम भावना प्रकट करता हुआ कहता है कि चकवी के समान अकेली और कम बोलने वाली उस सुन्दरी अर्थात् यक्षिणी को अपना दूसरा प्राण कहता है तथा विरह से व्याकुल उसे पाले से पीड़ित कमलिनी के सदृश कहता है।

महाकवि कालिदास कामवासना परक मूल्य का वर्णन करते हुए कहते है कि यक्ष पत्नी के प्रति इतना कामुक हो चुका है कि वह अचेतन मेघ को ही सन्देशवाहक दूत बना देता है। इसका वर्णन मेघदूत में द्रष्टव्य है।

'कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु'।[12]

प्रस्तुत श्लोक में महाकवि ने स्पष्ट किया है कि काम से आर्त लोग चेतन और अचेतन को बिलकुल भूल जाते हैं। यही घटना पक्ष के साथ घटित हुई। वह उन विषयों में वेसुध हो गया जिसमें संसारीजन जागते हैं, मानो नये जगत् का अनुभव लेने के लिए उसने अचेतन मेघ से इस प्रकार का सन्देश कहा इससे यह दृष्टिगत होता है कि यक्ष में कामवासना परक मानवीय मूल्य दिखायी देता है।
सौन्दर्यपरक-मूल्य का वर्णन करते हुए कालिदास ने मेघदूत में यक्ष की भार्या का बड़ी सुन्दरता से चित्रण किया है–

तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्टी।
मध्ये श्यामा चकितहरिणीप्रेक्षणा निम्ननाभिः।
श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां।
या तत्र स्याद्युवतिविषये सृष्टिराद्येव धातुः।[13]

प्रस्तुत श्लोक में यक्षिणी अनिद्य सौन्दर्य से युक्त है वह पतली श्यामा युवती है उसके दाँत कटे हीरे के समान नुकीले है, होंठ पके बिम्बाफल के समान लाल है, कमर पतली है, डरी हुई हिरणी के से चकित नयनों से वह निहारती है, नाभि उसकी गहरी है, नितम्बों के भार के कारण मन्थर गति से चलती है, स्तनों के बोझ से कुछ-कुछ आगे की ओर झुकी हुई है यह यक्षिणी अलका की युवतियों में, विधाता की पहली सृष्टि है।
आध्यात्मिक जीवनमूल्य के अन्तर्गत अन्तःकरण का विशेष महत्त्वपूर्ण स्थान है। अन्तःकरण की निर्मलता, स्वच्छता से ही आध्यात्मिक मूल्य की प्राप्ति होती है कर्त्तव्यपरायणता और दैव की कृपा से ही जीवन सुखद हो सकता है और इसके लिए अन्तःकरण की शुद्धता परमावश्यक है कालिदास ने अपनी कृति मेघदूत में आध्यात्मिक जीवन मूल्य का वर्णन किया है–

कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा।
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण।।[14]

प्रस्तुत श्लोक में यक्ष कहता है कि यद्यपि जीवन में सुख, दुःख जो कुछ भी प्राप्त होता है वह मानव को भाग्य के अनुसार ही मिलता है ये सुख दुःख जीवन के स्थायी तत्त्व नहीं है सुख दुःख भाग्य के परिवर्तन के साथ बदलते रहते हैं। सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख की प्राप्ति होती है यह संसार का दस्तूर है इसी को भाग्य चक्र कहते हैं।

समस्त मेघदूत का समग्र अध्ययन करने के पश्चात् यह अवलोकित होता है कि किसी न किसी रूप में भारतीय संस्कृति तथा उसमें निःसृत मानवीय मूल्य हमें मानव के रूप में एक मानव होने का तथा निर्धारित मानवीय-मूल्यों के यथा पालन करने का उपदेश देता है आज समाज पूर्ण रूपेण दूषित हो चुका है समाज में हो रहे पापाचार, दुराचार, अशिष्टाचार, भ्रष्टाचार इन सभी का कारण कहीं न कहीं हमारे मानवीय मूल्यों का ह्रास ही है ऐसे में मेघदूत हमें यह सन्देश देता है कि जब एक अचेतन पदार्थ होकर मेघ यक्ष के दुख पीड़ा को सहन न कर उसके सन्देश को प्रियतम तक पहुँचा कर, नया जीवन देता है एक नया अहसास कराता है तो हम सब तो एक मानव हैं इसीलिए कालिदास भारतीय जीवन के सच्चे प्रवक्ता हैं भारत वर्ष की आत्मा उनमें जीती है और साँस लेती है यह भारतवर्ष जिसकी अखण्ड परम्परा में हम जीवित हैं, सुरक्षित हैं, हमारे सोचने विचारने हँसने-रोने और कर्म-धर्म करने का सम्पूर्ण तरीका प्रायः यद्यपि वही है जो कालिदास के मेघदूत में दृष्टिगोचर होता है। उनकी दुर्बलताएँ भारतीय जीवन की दुर्बलताएँ हैं भारत की धरती से, उसकी प्रकृति से उन्हें प्रगाढ़ प्रेम है इसलिए कालिदास सारे संसार के लिए आदर्शभूत हैं। वस्तुतः वाल्मीकि और वेदव्यास के समान कालिदास भी भारतीय मानवीय-मूल्यों के अन्यतम अवतार है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. मेघदूत पूर्वमेघ श्लोक-1
2. मेघदूत पूर्वमेघ श्लोक-6
3. मेघदूत पूर्वमेघ श्लोक-48
4. मेघदूत पूर्वमेघ श्लोक-9
5. मेघदूत पूर्वमेघ श्लोक-4
6. मेघदूत उत्तरमेघ श्लोक-47
7. मेघदूत पूर्वमेघ श्लोक-13
8. मेघदूत पूर्वमेघ श्लोक-6
9. मेघदूत पूर्वमेघ श्लोक-31
10. मेघदूत पूर्वमेघ श्लोक-38
11. मेघदूत उत्तरमेघ श्लोक-23
12. मेघदूत पूर्वमेघ श्लोक-5
13. मेघदूत उत्तर मेघ श्लोक-22
14. मेघदूत उत्तर मेघ श्लोक-52